कस्तूरलाल तागरा

ई-मेल:kastortagra@gmail.com

अच्छा किरायेदार

नीलेश का दो कमरे का सैट पिछले चार महीने से खाली पड़ा है । आज वह बाजार में अपने मित्र रामेश्वर से मिला, तो उससे कहा—" कोई अच्छा किरायेदार हो तो बताइयेगा।"

"मेरे एक मित्र अमृत पाल किराये पर मकान ढूँढ तो रहे थे ।" रामेश्वर बोला ।

"कल बुला लीजिये उन्हें मकान देखने के लिये ।" नीलेश ने तत्परता दिखाई ।

"कल क्यों, अभी मोबाइल किये देता हूँ उन्हें। वह शाम को कोर्ट का काम निपटाकर देखने आ जायेंगे ।"

अभी रामेश्वर ने अपना मोबाइल निकाला ही था कि नीलेश बोल पड़ा—"जरा रुकिए ! वह क्या करते हैं कोर्ट में..."

"वकील साहब हैं वह ।"

सुनते ही नीलेश के मुँह का स्वाद बिगड़ गया—"रहने दीजिये रामेश्वर भाई । मैं किसी पचड़े में नहीं पड़ना चाहता ।"

फिर थोड़ा रुकने के बाद स्पष्टीकरण देते हुए बोला—"दरअस्ल मैं किसी वकील, पत्रकार, पुलिस वाले और नेता को किरायेदार नहीं रखता ।"

रामेश्वर ने उसे आश्वस्त किया—"आप चिंता न करें... पूरी गारंटी है मेरी । अच्छे आदमी हैं अमृतपाल ।"

"जरूर अच्छे आदमी होंगे... लेकिन कोई और मिले, तो बताइयेगा ।" नीलेश ने रूखेपन से कहा।

ऐसे व्यवहार से रामेश्वर ने अपने आप को अपमानित महसूस किया । चेहरे पर उदासी छा गई ।

नीलेश ने तुरन्त बात सँभाली—"मित्र ! नाराज़ क्यों हो गये । सब के पास अपने-अपने व्यवहारिक फार्मूले होते हैं । शायद, कभी ये तुम्हारे भी काम आ जायें । एक बार मेरी बात पर गहराई से सोचना अवश्य।।"

और उसके बाद नीलेश मुस्कुराते हुए चला गया ।

रामेश्वर न चाहते हुए भी असमन्जस की स्थिति में आ गया । अनिर्णय ने उसे घेर लिया ।वह बड़ी देर तक सोचता रहा—"कहीं नीलेश का फार्मूला सही तो नहीं ?"

कस्तूरलाल तागरा

पापा ! आपने हमारे लिए किया ही क्या

प्रकाश का बेटा अभय चीखकर बोला—"आपने हमारे लिए किया ही क्या है । लोग कहाँ से कहाँ पहुँच गये । आप चाय-समोसे की किराये की दुकान पर ही अटके हो । कल क्या होगा हमारा ?... एक अच्छा घर तक तो खरीद नहीं पाये आप ।"

प्रकाश सोच भी नहीं सकता था कि उसका बेटा उसे इस तरह मूल्यांकित करेगा। बच्चों की पढाई के लिए कितनी मुश्किलें नहीं झेली हम पति-पत्नी ने । अपना पेट काटकर इन्हें अच्छे स्कूल और कॉलेज में पढ़ाया उन्हें ।

आज जब अभय के मनपसन्द कालेज में उसके दाखिले के लिए प्रकाश के पास डोनेशन के पैसे नहीं है, तो वह उससे ऐसे गंदे तरीके से पेश आ रहा है ।

अपनी सारी तपस्या बेकार हो जाने से वह अन्दर तक टूट गया । सोचने लगा, चाय की दुकान करना बुरा काम है क्या ?... इसकी कमाई से ही तो सब संभव हो पाया है।

रातभर सो नहीं सका प्रकाश । उबलता रहा।

सुबह उसने अभय से उसकी माँ के सामने पूछा, "बताओ ! तुम उतने प्रतिशत नम्बर क्यों नहीं ला पाये, जिससे अपने दम पर तुम्हारा एडमिशन हो जाता । कमी किसकी तरफ से रही... तुम्हारे या हमारे ?"

अभय जवाब देने के बजाय बेशर्मी पर उतर आया—"सब माँ-बाप करते हैं इतना तो अपने बच्चों के लिए ... आपने क्या ख़ास कर दिया ?"

माँ ने डाँटा—"यह कौन-सा तरीका है पापा से बात करने का... यही संस्कार दिये हैं हमने तुम्हें?"

अभय चुप खड़ा रहा ।

मां कुछ देर मनन करती रही । फिर पति से कहा—"मेरी चूड़ियाँ और हार बेच देते हैं... आप अपनी बैंक की एफडी तुड़वा लीजिये... शायद इतने से काम चल जायेगा । नहीं तो कुछ उधारी उठा लेंगे ।"

प्रकाश भड़क गया—"बाकी दो बच्चों को भी तो ठीक से पढाना-लिखाना है । मुझे अपनी चादर का पता है ।"

पत्नी बोली—"मुझे आपकी मेहनत पर पूरा भरोसा है । आप सब ठीक कर लेंगे... हिम्मत न हारिये।"

प्रकाश कुछ नही बोला । अलमारी से एफडी लाकर पत्नी को पकड़ाते हुए कहा—"दोपहर बाद दुकान पर आ जाना... बैंक चलेंगे ।"

ज़िन्दगी में आज पहली बार प्रकाश का मन दुकान जाने को नहीं कर रहा । लेकिन गृहस्थी भी तो चलानी थी । उसने चाबी उठाई और थके कदमों से दुकान खोलने के लिए चल पड़ा।